मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 3

MHD–021

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम. ए. हिन्दी)

(एम. एच. डी.)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2026

एम.एच.डी.-021 : मीरा का विशेष अध्ययन

समय : 2 घण्टे *अधिकतम अंक : 50*

नोट : *प्रश्न संख्या **1** अनिवार्य है। शेष प्रश्नों में से किन्हीं **तीन** के उत्तर दीजिए।*

---

1. निम्नलिखित पद्यांशों में से किन्हीं **दो** की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 2×10=20

(क) बादल देख डरी हो, स्याम मैं बादल देख डरी।

काली पीली घटा उमंगी, बरस्यो एक घरी। 1

जित जाऊं तित पानि हि पानी, हुइ सब भोम हरी॥ 2

जाका पिव परदेश बसत है, भीजै बार खरी॥ 3

मीरां के प्रभु गिरधरनागर, कीज्यो प्रीत खरी॥ 4

(ख) हरि से गरब किया सोई हारा॥

गरब किया रत्नागर सागर, जल खादरा कर डाला।

गरब किया लंकापति रावण, टूक टूक कर डाला॥ 1

गरब किया चकवे चकवी ने, रैन बिछोहा डारा।

गरब किया बन की चिरमी ने, मुख कारा कर डारा॥ 2

इन्दर कोप किया वृज ऊपर, नख पर गिरवर धारा।

मीरां के प्रभु गिरधर नागर, जीवन-प्राण हमारा॥ 3

(ग) आली मोहि लागह बृन्दावन नीको।

घर घर तुलसी ठाकुर पूजा, दर्शन गोविंदजी को॥ 1

निर्मल नीर बहत यमुना को, भोजन दूध दही को॥ 2

रत्न-सिंहासन आप बिराजे, मुकुट धर्‌यो तुलसी को॥ 3

कुंजन कुंजन फिरत राधिके, शब्द सुनत मुरली को॥ 4

मीरां के प्रभु गिरधरनागर, भजन बिना नर फीको॥

(घ) पिया बिन सुनूं सारो देस, जतन करो हे आली हे।

हैं कोई ऐसा पिया मिलावै, तन मन धन करूं भेट॥ 1

तेरे कारण बन बन डोलूं, कर जोगिन को भेष॥ 2

अवधि विदीति अजहूं न आये, पीरे पड़ गये केस॥ 3

मीरां के प्रभु गिरधरनागर, ध्यावै शेष महेस॥ 4

2. नवधा भक्ति की विशेषताएँ बताते हुए मीरा की भक्ति का विवेचन कीजिए। 10

3. मीरा के जीवन की उदात्तता एवं आदर्शों पर प्रकाश डालिए। 10

4. मीरा को आधुनिकता बोध से जुड़ी स्त्री क्यों कहा जा सकता है ? अपने विचार व्यक्त कीजिए। 10

5. मीरा की काव्यकला के विविध पक्षों की चर्चा कीजिए। 10

6. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए :

$2 \times 5 = 10$

(क) साहजो बाई

(ख) बीबी रत्न कुँवरि

(ग) मीरा की सामाजिक चेतना

(घ) मीरा का परिवेश और माधुर्य भाव

× × × × ×